किसान मेला

हिमाचल प्रदेश में कुल पशु संख्या 48.44लाख के करीब है (19वीं पशुधन जनगणना), जबकि कुल मानव जनसंख्या 71.23 लाख के आस पास है मानव आवादी के लगभग 90 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले हैं और इस बावदी का एक बहुत बड़ा भाग, अपनी आजीविका के लिये एकीकृत खेती प्रणाली (कृषि व पशुपालन) पर निर्भर रहता है। एकीकृत खेती प्रणालीके अंतर्गत करीब–करीब 20,49,237 लोगों का रोजगार होता है जो कि प्रदेश के कुल रोजगार (29,92,461) का 68.48 प्रतिशत हिस्सा है इस एकीकृत खेती प्रणाली में पशुपालन का महत्व और अधिक इसलिये बढ़ जाता है क्योंकि राज्य की कृषि उत्पादकता वर्षा पर निर्भर रहती है और साथ ही साथ दिन प्रतिदिन बदलता हुआ मौसम कृषि उत्पादकता में एक बहुत बड़ी रूकावट बन कर खड़ा हो गया है। इसके इलावा राज्य के 12 में से 6 जिले मुख्य तौर पर पशुपालन पर ही निर्भर हैं।

पशुधन न केवल दूध, मांस, अण्डे, ऊन, त्वचा, खाल व हडिडयां प्रदान करता है बल्कि मूत्र व गोबर भी प्रदान करता है मूत्र और गोबर की उपयोगिता दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। ऐसी कई प्रकार की देशी दवाइयां हैं जिनमें मूत्र का प्रयोग हो रहा है। पतंजली ने इस प्रकार की कई देशी दवाइयां बनाना शुरू किया है। पतंजली ने मूत्र से फिनायल तैयार की हैं, जिसका नाम 'शुद्धि' रखा है। इस प्रकार गाय का मूत्र दिन प्रति दिन महत्वपूर्ण बनता चला जा रहा है। अभी–अभी खोज के द्वारा पता चला है कि देशी गाय के मूत्र में 'सोना' प्रचुर मात्रा में होता है। इसकी मात्रा करीब– करीब 10–30 मि. ग्रा. प्रति लिटर मूत्र पाई गई ह। यह रिपोर्ट गुजरात के एक कृषि विश्वविद्यालय के जैव–प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा टेलीविजन पर प्रस्तुत की गई है। 'गीर' नसल की गाय के मुत्र में यह सोना पाया गया है।

दूध सभी के लिये आवश्यक खाद्य पदार्थ माना गया है चाहे वह छोटा नवजात शिशु हो, बच्चा हो या बूढ़ा आदमी हो सब के लिये दूध की आवश्यकता पड़ती है। मानव स्वास्थय के लिये दूध ही एक ऐसा पदार्थ है, जिसे 'पूर्ण भोजन' का दर्जा प्राप्त है क्योंकि इसमें वह सभी पोषक तत्व पाये जाते हैं। जोकि स्वास्थयके लिये जरूरी है, उदाहरण के तौर पर कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज और विटामिन। दूध हमें कई प्रकार के पशुओं से प्राप्त होता है जैसे भैंस, गाय, बकरी व कुछ हद तक याक व ऊंट से। भैंस के दूध में क्योंकि वसा की मात्रा बहुत अधिक होती है। इसलिये स्वास्थय के लिये बढ़ा अच्छा नहीं माना गया है। इसके विपरीत गाय का दूध और सेहत के लिए अच्छा माना गया है। क्योंकि इस में वसा की मात्रा काफी कम होती है और साथ ही साथ यह दूध विटामिन ए से भरपूर होता है। जो कि बच्चों और बूढों के लिये बड़ा उपयूक्त माना गया है। इसके इलावा देशी गाय का दूध और अधिक फायदेमंद माना गया है क्योंकि इस दूध में एक खास प्रकार की प्रोटीन A-2B casein पाई गई है। इस milk protein से diabetes व neuro-

degenerative बिमारियों के होने का खतरा कम हो जाता है। इसके इलावा बकरी का दूध और भी अधिक फायदेमंद माना गया है। कारण यह है कि बकरी का दूध और मानव का दूध करीब–करीब एक जैसा है। राष्ट्रीय स्तर पर जानने की कोशिश करें तो पता चलता है कि एक मानव के लिए प्रतिदिन 280 ग्रा. दूध की आवश्यकता होती है। (ICMR) भारतवर्ष में दूध की उपलब्धता प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 290 ग्रा. के आसपास है। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश में दूध काफी मात्राा में उपलब्ध है।

इसके इलावा यह सत्यापित हो चूका है कि animal origins प्रोटीन–पौध–origins प्रोटीन की अपेक्षा ज्यादा बेहतर है क्योंकि animal origins प्रोटीन पौध origins प्रोटीन की अपेक्षा ज्यादा बेहतर है क्योंकि animal origins प्रोटीन में bond अधिक मात्रा है। animal origins प्रोटीन में methionine, tryhtophan, Lycine व Isoleucine की मात्रा अधिक पाई गई है जबकि plant origins प्रोटीन में सह तत्प बड़ी कम मात्रा में होते है।

राज्य में पशुधन खेती ज्यादा करके असंगठित रूप में ही है। संगठित रूप में बड़ी कम है। सिर्फ ऊना जिला या कुछ और मैदानी इलाकों में ही संगठित पशुधन खेती का प्रचलन है। असंगठित क्षेत्र में भी 4–5 कनाल जमीन के साथ 2–3 पशु पालने का रिवाज है। भूमि से जानवरों को घास मिल जाता है और पशुओं से इसके बदले जमीन के लिये गोबर/खाद मिल जाती है। इन्सान को दोनों तरफ से फायदा मिलता है जमीन से अनाज, दालें व फल इत्यादि पशुओं से दूध, मांस बगैरा।

क्योंकि पशुपालन एक ओर असंगठित रू‍प में है दूसरी और राज्यकी भोगौलिक स्थिति ऐसी ही कि पशुपालकों जो सुविधा मिलनी चाहिये वह पहुंचाई नहीं जा सकती है। पशुपालकों तक सरकारी योजनाएं पहुंचना कठिन काम है।

अवारा पशुओं की समस्याः

जो पशु दूध देना व बच्चा देना बन्द कर देते हैं, किसान लोग उन्हें सड़कों पर अवारा छोड़ देते हैं। अवारा पशुओं के कारण समाज को कई प्रकार के नुकसान झेलने पड़ते हैंः सड़क घटनाएं, खेतों में फसलों को नुकसान और बिमारियां के फैलने का खतरा हमेशा बना रहता हैं अवारा पशु जगह –जगह गन्दगी भी फैलाते हैं अतः यह स्वच्छ भारत के लिये भी एक कलंक की तरह है। किसान पशुओं को क्यों छोड़ देते हैं एक बड़ा कारण पहले बताया गया है। कारणों में बांझपन व कुपोषण मुख्य माने गये हैं।

इन पशुओं को मुख्य धारा में वापस लाने के लिये सरकार व कुछ गैर सरकारी संस्थाएं अच्छा काम कर रहीं हैं। जगह–जगह गौसदन खोले गये है। गौशालाएं खोली गई हैं। परन्तु यह सब साधन बड़े कारगर

सिद्ध नहीं हुये हैं। कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर में भी इस समस्या को सुलझाने के लिये कई तरह के शोध कार्य किये जा रहे हैं। इसमें एक खास प्रयत्न नीचे लिखा जा रहा है जो कि कृषि विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, बजौरा में किया गया। यह प्रयोग 10 अवारा गायों पर किया गया। यह प्रयोग कुपोषण के ध्यान मे रखकर किया गया।

इन 10 गायों को पकड़ की कृषि विज्ञान केन्द्र, बजौरा में रखकर उनको संतुलित चारा देना शुरू किया। चारा देने के बाद पशुओं के स्वास्थय में फर्क पड़ा और स्वास्थय अच्छा होने लगा दिन प्रतिदिन ऐसा करते–करते ये गायें जो heat में नहीं आती थी, heat में आना शुरू हो गई। इन गायों को insemination किया गया। यह देखा गया कि 10 में से 6 गाएं गाभिन हो गई यानि 60 प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई। इससे सिद्ध हुआ कि यदि केवल कुपोषण को ही सिर्फ ठीक कर लिया जाये तो 60 प्रतिशत तक इस समस्या को हल किया जा सकता है।

बन्दरों की समस्याः बन्दर जो आवादी में घुस आये हैं और जंगल छोड़ दिये हैं, किसानों के लिये बड़े नुकसानदायक सिद्ध हो रहे हैं। बन्दरों की बजह से राज्य की कृषि पर बड़ा प्रभाव पड़ा हे। हांलांकि यह forest (जंगलात) विभाग की समस्या है, तथापि इसकी ओर प्राथमिकता के आधार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

हरे चारे से बंचित अवधिः

नवम्बर से मार्च तक हरा मिलना बड़ा कठिन होता है। अतः चारा भंडारण, silage making और Hay making करने की जरूरत पड़ती है। इसके पशुपालन के धन्धे को लाभप्रद बनाया जा सकता है।

अतः सभी किसान भाइयों से निवेदन है कि इन सब चीजों पर ध्यान दें और पशुपालन के धन्धे को और लाभकरी बनाएं।